सामाजिक नियंत्रण में पुरस्कार और दण्ड की भूमिका

सामाजिक नियंत्रण की यह दोनों प्रविधियाँ अपनी प्रकृति से भिन्न होते के बावजूद व्यक्ति और समाज को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरस्कार में जहाँ 'प्रोत्साहन' निहित है, वहीं दण्ड में 'भय' निहित है। सामाजिक नियंत्रण में 'प्रोत्साहन' और 'भय' दोनों आवश्यक है।

ध्यान रहे पुरस्कार (प्रोत्साहन) का निर्धारण समाज के सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों के द्वारा होता है। समाज जिन कार्यों/मूल्यों को अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक समझता, उन्हीं का पालन करने के लिए वह अपने सदस्यों को प्रोत्साहित करता है। पुरस्कार के दो रूप होते है – भौतिक और अभौतिक। आर्थिक सहायता अथवा मैडल भौतिक स्वरूप के उदाहरण है जबकि प्रशंसा अभौतिक स्वरूप का। पुरस्कार को परिभाषित करते हुए हुए कहा जा सकता है 'पुरस्कार सामाजिक मूल्यों अथवा कुछ विशेष कार्यों के लिए समूह द्वारा दिया जाने वाला वह प्रतिदान है जो भौतिक या अभौतिक रूप में पुरस्कार ग्रहण करने वाले व्यक्ति के प्रति समूह की प्रशंसा को व्यक्त करता है।'

पुरस्कार द्वारा सामाजिक नियंत्रण का प्रारम्भ सामाजीकरण की प्रक्रिया से ही हो जाता है। परिवार में जब माता-पिता, बच्चे के अच्छा कार्य करने पर पुरस्कृत किया जाता या फिर पुरस्कार द्वारा वांछित कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाता है। चूंकि पुरस्कार व्यक्ति को आन्तरिक रूप से प्रोत्साहित करता है, इसीलिए इसे सामाजिक नियंत्रण का रचनात्मक साधन भी कहते है। प्रत्येक समाज ऐसे

व्यक्तियों को पुरस्कृत करता है जो समूह कल्याण के कार्यों में संलग्न है, इससे कुछ लोगों की आत्मवादी मनोवृति पर नियंत्रण लगता है, साथ ही पुरस्कृत व्यक्ति खुद अपनी क्षमता को बढ़ाता है।
सामाजिक नियंत्रण में पुरस्कार की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए रास ने कहा था " पुरस्कार द्वारा स्थापित किए गए नियंत्रण औपचारिक साधनों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक और प्रभावशाली होता है।"

पुरस्कार के विपरीत दण्ड सामाजिक नियंत्रण का बाध्यतामूलक साधन है। डा० सेथना 'Society and the Criminals' के अनुसार, " वास्तव में, दण्ड एक प्रकार की सामाजिक निन्दा है जिसमें शारीरिक कष्ट अथवा यातना का समावेश होना सदैव आवश्यक नहीं होता।"

दण्ड के द्वारा समाज या राज्य व्यक्ति को भय दिखाता है कि नियमों का उल्लंघन स्वयं उसकी प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा सकता है। दण्ड के परिणामस्वरूप होने वाला नुकसान व्यक्ति में यह भाव लाता है कि कानूनों का पालन उपयोगी है। यह भावना लोगों की मनोवृत्तियों को संतुलित बनाती है। कई बार दण्ड के माध्यम से समाज अपराधी व्यक्तियों को गैर-अपराधियों से पृथक रखकर के भी अपराध बढ़ने से रोकता है। कई बार अपराध की प्रकृति के अनुरूप यह पृथक्करण आजीवन अवधि तक होता है। ध्यान रखें आधुनिक दण्ड व्यवस्था दण्ड के अतिरिक्त सुधार पर भी जोर देती है। प्रोबेशन, पैरोल, विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम, नैतिक शिक्षा द्वारा अपराधियों को सुधारने का मौका दिया जाता है।

अतः सामाजिक नियंत्रण में दण्ड एवं पुरस्कार दोनों के अपने महत्व हैं।